

5111
2148 I

ASIA ARCHIVES



प्रीतिवन्तमशापूयमाहात्म्यं ॥ अथ यथिमान्नाय ॥ ज्ञानी च यादृलीयूथी च
यके ४ धरा उल्लेखकं कीदृशं ज्ञानी च ॥ मूढं च ४ गगनयुके ४ वंधूक ४ य
मकृन्दाख्ये ४ गालपूष्ये ध्यागके ४ कसूरु ४ किंशुक ४ पूष्ये ४ पुत्रागता
गक ४ नेशा ४ वक्रलेखुगने ४ न्यो ४ चक्रं दाय्यं सरुवे ४ काशसद्विद्वि
गिसं ४ कलिकानके ४ वकात्यले मरुदायूष्ये ४ यवा न्यवर्गधवान् ४
किमू ४ किं यदा ज्ञानी ४ बालायन विवर्द्धनी ४ धरायातलि कादवी वद

किंच मरुदाय ४ गालिकियुष्टियनं यमं ४ गगनयुगं सूर्यगकं ४ वंधूकव ४ ध्यद
धोकां ४ गथानका ध्यामानकं ॥ सोराग्यं गालिपूष्ये ध्ये ४ मूढलं सूर्यदायकं ४
कदम्बं वक्रलकृन्दं ४ वक्रकृन्दायनाशनं ॥ कसूरु किंशुकं द्रवि ४ व ४ ध्यामा
कलिकानकं ४ मरुदालक्रीयदोषूष्ये ४ पुत्रागतागकं ४ नेशा ४ वकमूर्खलक
व ४ ध्यानीलकृष्णं च मान ४ गिसं ४ सरुवे ४ पूष्ये ४ कमया ल्यव्यं सदा ४
तस्य निधानं जायत सत्यमननं संशय ४ ॥ अथ ४ गगनयूष्यकव ४

दत्ती पूजया जन्म पूज्या गतयुगवृद्धिकामः ४ एरिजा गिपूथी ४ कूडिका
दवीमरु पूजयामि यिष्य ॥ ॥ अथ कुकि मूकि रुलया फिकामः ४ एरिजा
गीपूथी ४ कूडिका ॥ ॥ वानापूथ्यस्य ॥ वलविवर्जनरुलया फिकामः ४ एरि
वालापूथी ४ कूडिका ॥ ॥ ॥ गतया गलिपूथ्यस्य ॥ अथ मरुयगया फिका
मः ४ एरि ४ ॥ गतया गलि कापूथ्य ४ कूडिका ॥ ॥ यमपूथ्यस्य ॥ अथ गतिकिपू
थिरुलया फिकामः ४ एरि ४ यमपूथी ४ कूडिका ॥ ॥ वकवन्धूकपूथ्यस्य

॥ अथ मानगरुलया फिकामः ४ एरि वकवन्धूकपूथी ४ कूडिका ॥ ॥ गलि
पूथ्यस्य ॥ अथ सोराग्यरुलया फिकामः ४ एरि ४ गलिपूथी ४ कूडिका ॥ ॥
मूजानपूथ्यस्य ॥ अथ मरुवरुलया फिकामः ४ एरि मूजनपूथी ४ ग्रीकूडि
का ॥ ॥ गतयगपूथ्यस्य ॥ अथ गतिकिपूथिरुलया फिकामः ४ एरि ४ गतय
पूथी ४ ग्रीकूडिका ॥ ॥ वधूकपूथ्यस्य ॥ अथ वधूकपूथी ४ ग्रीकूडिका ॥ ॥ गलिपूकस्य ॥ अथ सोराग्यरुलया फि

कामः प्रहृष्टः मलितपूष्यः श्रीकृत्तिका॥ ॥ कदंबवकुल कंदवचकं
स्य॥ अथ अघनाक्षं रुद्रप्राफिका कामः प्रहृष्टः कदंबादिपूष्यः श्रीकृत्तिका॥
॥ ॥ कूर्मरुकिंशुकपूष्यस्य॥ अथ वस्यमाहृष्टिकावकरुद्रप्राफिका
मः प्रहृष्टः कूर्मरुकिंशुकपूष्यः श्रीकृत्तिका॥ ॥ यूनागलैकंशवपूष्यस्य
॥ अथ महालक्ष्मीरुद्रप्राफिका कामः प्रहृष्टः यूनागनागकंशवपूष्यः श्रीकृत्तिका॥

का॥ ॥ नकात्यलस्य॥ अथ वस्यरुद्रप्राफिका कामः प्रहृष्टः नकात्यलपूष्यः
श्रीकृत्तिका॥ ॥ नीलकृष्णात्यलपूष्यस्य॥ अथ मवसरुद्रप्राफिका कामः
प्रहृष्टः नीलकृष्णात्यलपूष्यः श्रीकृत्तिका॥ ॥ अथ गणिसंक्षपूष्यस्य॥ अ
थ गणिसंक्षपूष्यस्य रुद्रप्राफिका कामः प्रहृष्टः गणिसंक्षपूष्यः श्रीकृत्तिका॥ ॥
दमनपूष्यस्य॥ अथ सर्वयापकयसरुद्रप्राफिका कामः प्रहृष्टः दमनपूष्यः

ग्रीकृत्तिका० ॥ तुलसीमञ्जरीपूष्ये ॥ अथ सर्वपापक्षयकरुलपा
फिकामः ॥ एरि तुलसीमञ्जरीपूष्ये ॥ ग्रीकृत्तिका ॥ ॥ सिकाधूविस्वान ॥ अथ
वस्यार्घ्यकरुलपाफिकामः ॥ एरि ॥ सिद्धनीपूष्ये ॥ ग्रीकृत्तिका ॥ ॥
वक्रगिर्षापूष्ये ॥ अथ सर्वविघ्नविनाशनकरुलपाफिकामः ॥ एरिव
क्रगिर्षापूष्ये ॥ ग्रीकृत्तिका ॥ ॥ कदंबपूष्ये ॥ अथ पापनाशकरुलपा

कामः ॥ एरि ॥ कदंबपूष्ये ॥ ग्रीकृत्तिका ॥ ॥ वक्रलपूष्ये ॥ अथ अविनाशिरु
लपाफिकामः ॥ एरिवक्रलपूष्ये ॥ ग्रीकृत्तिका ॥ ॥ कृष्णपूष्ये ॥ अथ पापना
शकरुलपाफिकामः ॥ एरिकृष्णपूष्ये ॥ ग्रीकृत्तिका ॥ ॥ अथ ॥ कनकदंबीपूष्ये
जनजन्यपूष्ये ॥ एरि कनकदंबीपूष्ये ॥ ग्रीकृत्तिका ॥ ॥ कनक
पूष्ये ॥ अथ समुद्रकरुलपाफिकामः ॥ एरिकनकपूष्ये ॥ ग्रीकृत्तिका ॥ ॥

कनवीनमाला पृथस्य ॥ अथ अग्निश्चामय हूज न्यरुलया कि पूर्वक सूर्य
ना कम हिगत्व काम ॥ अग्निश्चामय हूज न्यरुलया कि पूर्वक सूर्य
पृथस्य ॥ अथ अग्निश्चामय हूज न्यरुलया कि पूर्वक सूर्य
महिगत्व कामनया अग्निश्चामय हूज न्यरुलया कि पूर्वक सूर्य
न्या ॥ ॥ वयकादि न्यरुलया कि पूर्वक सूर्य

मूनकउरुनाम्नाय ॥ हल्लो गनु ॥ माहाकावसंदिगायां, शिवाय ॥ ४ कर्तुका
नेयचयक ॥ काविदानक ॥ वकलेथेवमंदाये ॥ कन्दयथे कवूटके ॥ लग्ना
शियमरदस्यमृडइव्वकलेनयिनकाचनानेव ॥ धर्कथे, पुन्नाग ॥ कनकीगने
सखलिकाशिजातिशिदमनेवपि ॥ गतवर्णमात्रिकाशिनम्लानेव्वन्धुजीवके
॥ सगीशिथजवापूथे ॥ कववीनेथकिथुके ॥ यालिजान ॥ माहलेथेयथेनी

सूची २

लाखनेत्रयि ॥ माधवीरिर्महवके नवनजीगयाय चिन्मनेगधकदवेधडाघप
थो ४ सकंठाने ॥ अर्जुन नकुसुमेनत, दवीसाधकसरुम ॥ गध ॥ विलायनयथ
धीनि कनेदद्यावमानने ॥ नगधनान किंचिदरि, यूसैष्यीतिकानकी, अगाय
ननदागयी विलायन प्रियययक ॥ अथनेमिरिक ॥ यथ ॥ ग्रसैयूर्यवकुलानी
हि, वेधखमासिकानयेन ॥ नागकंठानयुष्माध, अरुअरुविअमाचनन ॥ अ

खारुउप्रकरुच्य ४ कनवीनस्यसंचय ॥ वयकाल्यलयमाना, रुयत्तनरसीध
न ॥ वाकल्य ध्रुवस्य मागिराडयदचन ॥ रुयिहिदागया, वंधूकस्याधिन
गध ॥ अगल्यकुसुमानादि, रुत्रिताकारिकचन ॥ अविअविलयनगधीमा
नधीषसदाचन ॥ योवेइवीकनानादि, सदाहतिरुलपद ॥ कन्दसामाचमा
सि, सर्वकल्याणकारक ॥ खलु (ह)माधवीयुयी, सर्वसिद्धिविधायक ॥ वेण ५॥

कस्य कलिकलि कालवीना णिनी ॥ मालगी यूथिका चैव दमनं कलिकान काक
 वृष्ट कंकवृष्ट क ममू नयाटलागय ॥ नवमालिका कयूषं तथा चैवातिमूकक
 शांजकाद होतानि सदा कस्य नानि वनानने दयानि जगदगाये तनेने मिह काञ्चन ॥
 ॥ हावै नो गदे ॥ चय कयूषास्य ॥ अथ वृं नयूष कन दादवी पूजन अन्य पूष
 हागुष्ट वृद्धि रुलया फिकाम ॥ ८१ ॥ शुभं मय कयूष ॥ ८२ ॥ शुभं कालिका दवी मरु पू
 जयिष्य ॥ ॥ अवायूषास्य ॥ अथ पटवका दिला रवु न्न दया दियामू कि रुलया फि

काम ॥ ८१ ॥ शुभं वायूष ॥ ८२ ॥ शुभं कालिका ० ॥ ॥ मालपूषास्य ॥ अथ वागी मल रुलया
 फिकाम ॥ ८१ ॥ शुभं मालगीयूष ॥ ८२ ॥ शुभं कालिका ॥ ॥ जातिपूषास्य ॥ अथ मदीया
 लवसग रुलया फिकाम ॥ ८१ ॥ शुभं जातिपूषास्य ॥ ८२ ॥ ॥ यूथिकायूषास्य ॥ अ
 थ मधु विरुलया फिकाम ॥ ८१ ॥ शुभं यूथिकायूषास्य ॥ ८२ ॥ ॥ नागकंठनयूषास्य ॥ ८३
 पल रुलया फिकाम ॥ ८१ ॥ शुभं नागकंठनयूषास्य ॥ ८२ ॥ ॥ चय कयूषास्य ॥ अथ
 दमलारु रुलया फि ॥ ८१ ॥ शुभं मय कयूष ॥ ८२ ॥ ॥ माधवीयूषास्य ॥ अथ

काम १

महियालत्वरुलयाफिकाम ८५ हरिर्माधवीयूथे ८ ग्रीयुअ १॥ ॥ अकिंतिमू
कयूथस्य ॥ अशु वृद्धिरुलयाफिकाम ८५ हरि ८ अतिमूकयूथे ८ ग्रीयुअ ॥ ॥ मलिका
यूथस्य ८ धनागरुलयाफिकाम ८५ सिमलीकायूथे ८ ग्रीयुअ ॥ ॥ कन्दयूथस्य
॥ अशु करि रुलयाफिकाम ८५ रि कन्दयूथे ८ ग्रीयुअ ॥ ॥ वन्धूकयूथस्य ॥ वान्ध
वरीय रुलयाफिकाम ८५ हरि ८ वन्धूकयूथे ८ ग्रीयुअ १॥ ॥ जवायूथस्य ॥ अशु ८
कन्दयूथस्य ८ रुलयाफिकाम ८५ हरि ८ जवायूथे ८ ग्रीयुअ ॥ ॥ यन्धयूथस्य ॥ अशु ८ अशु वृद्धि

[illegible]

नागरुल ॥ ॥ पुनरागपुष्यस्य लायलारुल ॥ ॥ यैलांगपुष्यस्य ॥ कथिकापु
ष्यस्य वरुनतिरुल ॥ ॥ यटालपुष्यस्य दीर्घायुत्तरुल ॥ ॥ गगले
पुष्यस्य मान्यलारुल ॥ ॥ यलांगपुष्यस्य गजाधिकालरुल ॥ ॥
गिनीषपुष्यस्य प्रमदाश्रीरुल ॥ ॥ अयनीपुष्यस्य रुलधि ॥ ॥ विलय
स्य यर्लंगतिरुल ॥ ॥ सिद्धिलक्ष्मीर्जनतदवरुल ॥ ॥ अथनेमिहिक ॥ वेधस्य ॥ अ
थवेधस्यमास्य ॥ एरिर्वकलेपुष्ये ॥ धीगुञ्जकालिकादवीमहं पूजयिष्य ॥ ॥ अथ ॥

अथ अश्वमास्य ॥ एरिर्नागकालेपुष्ये ॥ धीगुञ्ज ॥ ॥ आखार ॥ अथ ॥ आखारमा
स्य ॥ एरि ॥ कन विषयैये ॥ धीगुञ्ज ॥ ॥ धीवत ॥ अथ ॥ धनदामास्य ॥ एरि ॥ वय
कपुष्ये ॥ धीगुञ्ज ॥ ॥ राद्रयद ॥ अथ ॥ राद्रयदमास्य ॥ एरि ॥ उधुपुष्ये ॥ धी
गुञ्ज ॥ ॥ आधिन ॥ अथ ॥ आधिनमास्य ॥ एरिर्वन्धुकपुष्ये ॥ धीगुञ्ज ॥ ॥ का
लिक ॥ अथ ॥ कार्लिकमास्य ॥ एरि ॥ नगस्यपुष्ये ॥ धीगुञ्ज ॥ ॥ मार्गशीर्ष ॥ अ
थ ॥ मार्गशीर्षमास्य ॥ एरिर्विलयये ॥ धीगुञ्ज ॥ ॥ योष ॥ अथ ॥ योषमास्य ॥

अतिरुलया फिकाम नरि इर्वाकल पृथो १ धी गुञ्ज ० ॥ ॥ माद्य ॥ अथ मा
 घमासं सर्वकल्याणरुलया फिकाम नरि विन्दयुथो १ धी गुञ्ज का ० ॥ ॥ रालु
 न ॥ अथ रालुपमास्य सर्वसिद्धिरुलया फिकाम १ नरि १ माधवीयुथो १ धी गु
 ञ्ज ० ॥ ॥ वेग ॥ अथ वेग मास्य कलिकालविनाशनीरुलया फिकाम १ न
 रि १ न १ मकयुथो १ धी गुञ्ज कालिकादवीमहं पूजयिष्ये ॥ ॥ अथ रावतु गम १ धी
 ॥ दलुवेवजावायुथो पदवक्त्र रुललरु ॥ वक्ररुल्यादिकपायकृष्णने १ धी

तिथिर्न ॥ अपवायासुमहास्मी मयवकुंनय १ धी गुञ्ज १ ॥ १ ॥ गायत्रिगुर्धप
 धं दद्यात्कृष्णायनाजिगा ॥ नथ ॥ अथ लो कन्दम १ धी गुञ्ज कलरुनमनाद
 ल १ ॥ रुयालिकसुमदव स्वयंमसि सदाधिव १ धी गुञ्ज नम १ धी गुञ्ज मादाय पृथम १ धी
 गुञ्ज न १ न क कं कम नावीवाकृत्वा न १ धी गुञ्ज स १ धी गुञ्ज १ ॥ १ ॥ अथ विव १ धी गुञ्ज
 १ ॥ न १ धी गुञ्ज स १ धी गुञ्ज ये न १ धी गुञ्ज १ ॥ १ ॥ विव १ धी गुञ्ज स १ धी गुञ्ज १ ॥ १ ॥ अथ
 दव १ धी गुञ्ज १ ॥ १ ॥ अथ दव १ धी गुञ्ज १ ॥ १ ॥ अथ दव १ धी गुञ्ज १ ॥ १ ॥ अथ दव १ धी गुञ्ज १ ॥ १ ॥

अथ कामे ॥ गधमवाकं ॥ हानावगने ॥ मालती कसुमेदविवागी ॥ अत्र यदा
यिका नवगम ॥ ४ ॥ सुर्मलीयाला ॥ आनियथेन होयेय ॥ मध ॥ सुयुथिका हि
॥ नयन्येनागकहने ॥ माधवी हिर्मलीयाला रुमलारुथे वयके ॥ अतिमुके
वद्विरुद्धिर्मलिका हिर्ननागम ॥ कन्दे ॥ कीर्तिमवाप्राति वन्धुकेर्वाभ्यवप्रिय ॥ अ
ताप्रथेन प्रियव ॥ संदयं या कि गच्छाम ॥ यद्वा यूनमाप्राति कसुमे ॥ कविता
रुव ॥ कदम्बेया विना ॥ ४ ॥ दन्तानेर्वेदिरासुव ॥ अयप्रा किर्मत्रवके ॥ ग

अनाह ४ कन ४ के ४। गथायना जिगायथो र्वत्सर्वाङ्ग सन्दन ४। सखालिकायस
नन पणलार ४ यद ४ धन ॥ १॥ कदा निन ४। कन वकले ४ कल मान्यता ॥ ३॥ र्वीया
धन धान्या नि ४। तल्या ४ ४। एव ४ दया ४। दाद्ययथोन्निलारा कययथोर्जनागम
४। नादना रुधनागे ४ वक छि कालेर्वरुनति ४। दीघायुत्तयटालेन तगने ४ सर्व
मान्यता ॥ ५॥ यना ४ ककुमेद वि वरु ४। गजा विकान ४। शिनीषयथो ४ यमदा जय
न्या ४ वरुयथिय ४। कनवी वेर्मन सिद्धिर्विलायने ४ यमीगति ॥ सायु श्री कामना

यीउ गितयुथो ४यहास्यत ४उडाटनेवहीकार प्रीतय वेविहमंजया ॥ गंधपूषः
 विहमंजया कर्तुंयलाहितसदा ॥ मोहनकामनीलारं पीतमवांयमर्ग ॥ कृत्वा हि
 वानदधवमान एवायिरुंदयं ॥ ॥ अथ निविज्ञानि ॥ माला कालसंहिताया ॥
 उलही स्त्रियामा र्जद्वलूने ४ सिधुवानकी ४ अर्कमर्गवांशकेश नवदवीप्रपू
 जयेत् ॥ ॥ दवीमित्यसितल ४ तन्यकन एमकृत्वात् ॥ सिद्धिलक्षणनगदव
 रुती ॥ ॥ अथ दक्षिणकाल्या ४ कालीतले ॥ नानाय हावलिहि नानापूषेर्मर्न

नमे ४ अयमार्जदलेत्यहो सुतिलहीवजिर्ग ४ उर ४ ॥ यूजनीयायदा रुक्मान
 धर्मगीघुरुलाकय ॥ तथा ॥ सुर्ग ४ एतलाहितो ४ कसुमेनचयकुले ४ विले
 म्मनूवकाशेय उलहीवजिर्ग ४ उर ४ ॥ दादायुथो विहमंजया वजयुथोमिधिरंशाम
 उमालातले ॥ यूथान्यायितथमदशानदयकृत्वा सितानिच ४ एतयुथंजवायुथं क
 ववीनतथप्रियं ४ तमनेमालगीजागी सवकीयुथिकातथ ४ धूसु नारक्षकवजुक
 ल ४ एतारुक्मायना जिगावकयुथी विलयर्ग चयकंतागकहारं ४ मल्लिकाजिठि

काकीची नवें कयत्यविकीर्ति ॥ अर्कपूर्यकाकनदं वर्धनं च प्रियसदा ॥ अरुमा
वविहाषा उषासवति कालिका ॥ यद्यप्युषासवति कन संवत्सर्वदवता ॥ रुद्रावाय
दिवाष्टका कालिका वनदासवत् ॥ मममनपूज्यते एव उषाधूमावती यना ॥ वनो
पूष्यो विविधेषु उषासवति सर्वदा ॥ आमलका मुपगता उषासवति पार्वती ॥
॥ हकि यामल ॥ सावित्री वरवानी च इमं देवी सनसती ॥ यार्थ यल लणीय
॥ सर्वकाम ॥ सुद्धि सिद्धि ॥ ॥ अथ नीलसत्र स्था ॥ तथ वाकं नीलमं तनु ॥

अरुमा च वडर्दशी पूजयच्च यथा विधि ॥ आह्ला सिद्धिमवाप्नाति जवापूर्य च
वर्धनी च नन्दनी चार्क कसुमं दद्यात् ॥ उषासवती जिता ॥ वंधूकामालया उष्ये रु
था क्काग प्रदाती वत् ॥ अर्घ्य दद्यात् प्रयत्नेन नित्य पूजा सु सर्वदा ॥ मम सुक ॥ य
ष्ये हा सुत्रका कर्क वेधूकं हात यणकं ॥ वर्धना दितय चैव कर्तुं कारद्वयं तथा ॥ व
कम न्दान चूनाति कनवी वाहिनी मय ॥ सन्धिका शितयं जाति क्रोम पूष्य ज
यन्तिका ॥ विलयणं कूलवकं सुनियुष्य च कहीनं ॥ वासनी दितयं चैव काही

पूर्यमत्रवर्क ॥ दमनं चलत्रंगं व. यथीयखालिकास्तथा ॥ सुगन्धि रत्नलाहिर्यो ॥
कसमेन च यत्कले ॥ कलविति प्रनगय ॥ ॥ अथ निविद्यानि ॥ शिवाकिनत्र ॥ तुलसी
मालतीवर्क ॥ यथोदद्यात्सन्नधी ॥ कलवृजामदावपि ॥ वर्जयस्मालतीपूर्य वर्जय
तुलसीदल ॥ ॥ अथ द्वात्राश ॥ वामकं वनत्र ॥ मन्दालया विजागंच वध्यसोरा
ग्यदायकं ॥ यीतजातसर्वकालं विहायकं रनदितं ॥ खड्गलं यथोजातिच कन्दर्पा
वृद्धिदायकं ॥ वंधूकं मादसोरा ॥ अवाचणी पूनाप्रिय ॥ उत्पलं धनवृद्धिं यम

योष्टिकं भवच ॥ पूनागसर्वसंयहि वरुणकंधनहानिकं ॥ कलादाहास सिद्धिच
कनकी च विवर्जयेत् ॥ मरुणतिष्ठल्लेयं मल्लिकाइखदायिका ॥ चक्रेयं यूरको
मंडु ॥ सिंखाइखमावेका ॥ दाहामादमवाप्राति सवनी सर्वसिद्धिदा ॥ यखालि
काजयकनी कलिका वृद्धिदायीका ॥ कसूदप्रितिदं चैव सुदर्शनधनप्रदं ॥ कन
वृद्धिसोरायं नीलद्रव्यं तुलानिकं ॥ दमनं सर्वसंयहि विलासयनाप्रिय ॥ नि
र्गन्धकटंगंधं व. वर्जय च कपूजने ॥ कषायनाजितामृत् सुतमालीतयेव





३ अथ वंशसो रात्र्यं स्यादिकानि ४५ तिमन्दात्रयात्रिजातपुष्पैः ४

[illegible]

श्रीमद्व्याससुतनामो महाभारत

वधूकपूष्यस्य ॥ अथ, मातृरुलप्राप्तिकाम ४८ ति ४ वधूकपूष्य ४ श्री ति पू ॥ ॥ अ
 वीपूष्यस्य ॥ अथ, त्रिपुत्राया त्रिभरुलप्राप्तिकाम ४८ ति ४ अवापूष्य ४ श्री म हाथ
 त्रिपुत्रसुन्दरीदवीमर्दपूजायिष्य ॥ ॥ उत्थलस्य ॥ अथ, धनवृद्धिरुलप्राप्तिका
 म ४८ ति उत्थलपूष्य ४ श्री म हा त्रिपुत्र १२ ॥ ॥ यक्षपूष्यस्य ॥ अथ, यौष्टिकरुलप्रा
 प्तिकाम ४८ ति ४ यक्षपूष्य ४ श्री ति पू १३ ॥ ॥ वज्रपूष्यनिविष्ट ॥ ॥ कलालपूष्य
 स्य ॥ अथ कलालवृद्धिरुलप्राप्तिकाम ४८ ति कलालपूष्य ४ श्री ति १३ ॥ ॥ कर्तृ

किपुष्यस्य निषिद्धं ॥ मरुपुष्यस्य निषिद्धं ॥ वयकपुष्यस्य ॥ अश्वपुष्यस्य लया
कि काम ४ न रिश्वस्य कपुष्य ४ गीमहादि १३ ॥ ॥ त्रिसंक्षपुष्यस्य ॥ अश्व ३४ इत्य
माचनरुलया कि काम ४ न रि ४ त्रिसंक्षपुष्य ४ गीमहादि १३ ॥ ॥ दाहपुष्यस्य ॥
अश्व माहुरुलया कि काम ४ न रि ४ दाहपुष्य ४ गीमहादि १३ ॥ ॥ सवनीपुष्यस्य ॥
अश्व सर्वसिद्धिरुलया कि काम ४ न रि सवनीपुष्य ४ गीमहादीय १२ ॥ ॥ सदा
लिपुष्य ॥ अश्व जयरुलया कि काम ४ न रि सेरुलिपुष्य ४ गीमहादि १३ ॥ ॥

कर्तृकापुष्यस्य ॥ रुलवृद्धि ॥ ॥ कमदपुष्यस्य ॥ रुनृवीति ॥ ॥ सुदर्शनपु
ष्यस्य ॥ धनवृद्धिरुल ॥ ॥ कुरुकपुष्यस्य ॥ सिद्धिसोरागरुल ॥ ॥ दम
नपुष्यस्य ॥ अश्व सर्वसंयतिरुलया कि काम ४ न रि दमनपुष्य ४ गीमहादिपु
नसुन्दरी दवीमहं पूजयिष्य ॥ ॥ निलदपुष्यस्य निषिद्धं ॥ ॥ विल्वपुष्यस्य
॥ अश्व यत्र मप्रियरुलया कि काम ४ न रि विल्वपुष्य ४ गीमहादीय नसुन्दरी
दवीमहं पूजयिष्य ॥ ॥ निर्मलपुष्यस्य वरुण ॥ ॥ कृष्णपुष्यस्य जिगापुः

[illegible][illegible]

ले १ सिन्दुवायेष्ट पूजयत्पूर्ववत् ॥ सोरायमाउलेतस्य मासमाष्टहजायः
त ॥ यायं विनाशायदवि यदिकमसदुत्तक ॥ ॥ अथ निविद्वानि ॥ गणेशाय
थ १ यथार्थं विनाशायदवि तार्त्रयस्वर्तुकेन विनिर्मात्यरुगे १ कसुमेनूक्तिं येन मष्टः
त्रि ॥ ॥ वागाहीतनु ॥ यत्राहीकाहाकाकसुमेनूक्तिं यद्वनगह्यजगु ॥ वागीतमालज
१ यथे १ उलही द्वितयेस्तथा पूजनात्यातकीचत्स्या दिव्यायिह न कियं ॥ त्रिपुत्रा
पूजनवर्था उलही सर्वदावर्धे १ उलही घ्राणमागु १ कर्द्धास्वतिसुन्दरी ॥ ॥

कोलालविय ॥ रेलवी सुन्दरीतात्रा वक्रविष्णु विवस्वता १ उलही वर्जिता पूजा सा
पूजा विरुलास्वत् ॥ ॥ अथ रेलवी सुन्दरीतात्रा यसंगवक्रविष्णु विवस्वता
पूजा उलही वर्जिता अविरुला सरुलेत्यर्थ १ ननु कवलवक्र विष्णादिपूजाम्
॥ तदुसात्रस्यनसा इत्यर्थ ॥ उलही निषेधतु दियवीनयिति ॥ तात्रा कसुखा
ईव ॥ तर्हि न्य ॥ दियवीनयात्रवनी विद्वप्रतिपादकवचनारवागु ॥ ॥
अथ पूषा नरस्यकला लिख्यं ॥ अत १ पूषास्य मरुतास्य लक्ष्मणमाष्टवदाम्यदी

यं ह्यं त्वासाधक ४ सिद्धिं लक्ष्मिर्न नदी दाय ॥ वयं कस्य यदानेन, स्वर्गवत्तु विधिं
लक्ष्मि ॥ नागकं धनदानेन नृपवान्धु रक्षितवत् ॥ पुत्रागपुत्रदानेन, बाल
क्षमिर्न वत्सदा ॥ कं धनस्य यदानेन, धनं नदी दायं कर्तुं ॥ यात्रिजागया विधिं
रुद्रदानेनायुः ४ यवर्द्धनं ॥ कन्दपुष्पयदानेन : काममाप्नाति वै क्व ॥ जातिमाल
गी कर्तुं पु ॥ पुत्रपुत्रिणिमागत्र ॥ काकिनाक्षप्रदयन, अकालमनदी दाय ॥ अर्धपु
ष्पयदानेन, पुष्पगयन मध्वरी ॥ यथामुग्धदिवलिना गथापुष्पनिनिष्ठिर्न

करवीरदययुष्प ४ पूजयज्जगदीश्वरी ॥ यतिपुष्पमकुल, यात्रयिस्त्रा निष्ठा
सूने ४ लक्ष्मिवाङ्मिणी कामा नाह्ना सिद्धिं यल्लयते ॥ लाहिनायायनकोवा कर
वीरमु सिद्धिद ४ वन्धुकस्य यदानेन यद्वत्सल्लयते ॥ अयत्रा जिगामहात्म्यं मे
वहासुव्वीम्यदं ॥ अयत्रा जिगाया अन्त्या प्रियादव्या न विद्या ॥ अयत्रा जिगाया
४ यर्त्तु, स्त्रिणा पूर्वभागसमा ॥ यानि वृष्युसा स्त्रिणा, तानि निर्गुणीति वा ॥ कर
वीरलिङ्गवृष ४ शिवावसति वै सदा ॥ शिवागच्छाध्वर्या ग ७ ॥ करवीरायना

जिता १ वक्रचन्दनमिष्टुव नयार्या गानपूजयेत् ॥ उद्यतमयमममनी साधू
जासरुलास्यता १ पूष्यव नर्धसंरुर् १ यण्वानि तिसंरुवे ॥ सावामाह इव
पूष्यव तिसंरु १ गानला दिर्ग १ गगये न १ ककुर्कवपूजयद्वा क्रिगपदी ॥ अयय
विगानि १ दि १ दे १ ये विगने वक्तिर्ग १ आसावामाह वेवपि पूष्य १ संपूजयद्वा ॥
कमले १ गित १ ग १ होयवाजयय रुलैलरु १ विलियये १ संपूष्य मउलैलरुगीलरु
॥ नीलास्यनेले १ सर्वकामान् क्रमद १ कामदो रुवत् ॥ सर्वधियवयूष्यपूष्यगदी १

समयाग १ ग १ कुरुन १ ग १ दवा १ प्रितिकर १ यव ॥ नमस्कृत्यजयमर्तु लक्ष्मि
द्विदायक १ यकलो सिद्धिदावत् १ गान १ अ १ ग १ ग १ ग १ वरुना वरुना कन सर्वसः
किषूयकुरु १ ग १ वयव १ असमासन १ विष्णुलाकषु इल्लु रं १ विना १ किं न १ की स्यान्ना
वा १ कि १ प्रसीदति १ ग १ ग १ कुरु १ नितर्ग १ क १ पूजा कथा दिवद १ १ अर्चयन् विष
ये १ पूष्यकुरु १ लक्ष्म्या रवत् ॥ अर्हिसायनमपूष्य पूष्यमिद्रियनीयद १ दयाः
पूष्यधर्मपूष्य हानपूष्यचयत्तम ॥ कसूनीकुरुमयेव कर्णन कर्म १ का कालयव

कंचेव दवता प्रीतिकालेकं ॥ इति नरस्य कला लिखीयुष्य नरस्य ॥ ॥ वयकपुष्य
स्या ॥ अथ सर्ववक्ररुल प्राफिकाम ८८ तिष्ठयक पुष्य ४ श्रीतिष्ठय न सुन्दरी दवीमर्द
पूजयिष्ये ॥ ॥ नागकंठय पुष्य स्या ॥ अथ त्रयवगुधरुल प्राफिकाम ८८ तिर्ना
गकंठय पुष्य ४ श्रीतिष्ठय न सुन्दरी दवीमर्द पूजयिष्ये ॥ ॥ यन्नागपुष्य स्या ॥ अथ द्वाः
वसाकिरुल प्राफिकाम ८८ ति ४ यन्नागपुष्य ४ श्रीतिष्ठय न सुन्दरी दवीमर्द पूजयि
ष्ये ॥ ॥ कंठय पुष्य स्या ॥ अथ नागिरुल ॥ ॥ यात्रिजातपुष्य स्या ॥ अथ चिह्निरुल

॥ ॥ यात्रिस्तपुष्य स्या ॥ अथ चिह्निरुल ॥ ॥ कन्दपुष्य स्या ॥ अथ नागिरुल
कामरुल ॥ ॥ जीतिष्ठय स्या ॥ श्रीतिष्ठय नरी संताप रुल ॥ ॥ ककुपुष्य स्या दवी
संताप रुल ॥ ॥ काकिलाकपुष्य स्या ॥ ॥ अथ कालमृत्पुष्य नागिरुल ॥ ॥ अथ
पुष्य स्या ॥ ॥ यत्रमधरी संताप रुल ॥ ॥ कत्रविपुष्य स्या ॥ सर्वतिष्ठ रुल ॥
॥ वधूकपुष्य स्या ॥ पदवक्रुल रुल ॥ ॥ कमलपुष्य स्या ॥ वाजये रुल ॥ ॥
नीलात्यलपुष्य स्या ॥ अथ सर्वकामरुल प्राफिकाम ८८ ति नीलात्यलपुष्य ४ ॥

करुते ॥ ॥ मार्तण्डिर्वस्यमास्यवकनार्चयंगयूनशसुतेलाक्षमतिक्रम्य
 धाक्रादुगणगकृति ॥ ॥ योयस्यउमासस्यपुत्रुमहाउयाच्ययंगयुद्धेनमा
 मयादवीलरुगयत्रमयदं ॥ ॥ माघवैवकुयादवीरुनविलेयपूजयंग
 ॥ बालार्कदीडियकनविमाननसगकृति ॥ ॥ रुद्रुनस्यउमासस्यगैधतो
 यनस्राययंग ॥ अर्चयेद्वाद्यपुष्टिमुद्रुस्यद्वासनसंलसता ॥ ॥ यंगवैव
 गगामासि नृस्यमीत्यंगनदीकनयार्चयद्वरषुषानलावैरुवइसर्वशुका ॥

॥ वैष्ण॥ खल्युमासस्य, चतनसन्नाययत्सदा, अर्चयच्छुक्रमन्दात्रेन स्वमे
 धरुल्ललरुत॥ अष्टमासतगादन्नाययत्सतननन॥ अर्चययन्नयूक्तेषु स्व
 प्रितकृत्यनागेति॥ ॥ लस२धीमहादवयाकस्वानकायायारुल॥ यद्यमा
 न्नायाउहनाम्नाय, सिद्धिलक्ष्मी, दक्षिणया॥ नीलसगस्वगीया, स्वानकायविधि
 तलुगलुवासीतया॥ ॥ सम्यगुं ८२८ आखाटवद्वि १३, धकृदुगुन॥

२० नमः शिवाय नमो वाग्विनाय ॥







